द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
'वेद : एक समग्र दृष्टि'

प्रतिवेदन

ज्ञान की अक्षुण्णता एवं समग्रता के सिद्धान्त ही भारतीय संस्कृति, वाङ्मय एवं दर्शन के केन्द्र में रहे हैं। यहाँ ज्ञान का सम्बन्ध उत्पत्ति अथवा नाश से न होकर साक्षात्कार के विमर्श से माना गया है। सभ्यता के आरम्भ से ही ज्ञान की नित्यता की इस अवधारणा को अनुभूतिगम्य मानकर विविध उपायों द्वारा उसकी अभिव्यक्ति पर बल दिया गया। वेद इसी नित्य एवं शाश्वत सम्प्रज्ञान के पर्याय रूप हैं। वैदिक परम्परा, इतिहासक्रम एवं बोधगम्यदृष्टि के मन्थन हेतु इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र के कलाकोश विभाग द्वारा दिनांक 30-31 मई, 2024 को **'वेद : एक समग्र दृष्टि'** विषय पर द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रथम दिवस प्रातः 10.30 बजे उद्घाटन सत्र का आरम्भ दीप प्रज्ज्वलन एवं वैदिक मंगलाचरण के साथ हुआ।

इस सत्र के मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. शैलेन्द्र राज मेहता, उपाध्यक्ष, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला, पद्मभूषण प्रो. कपिल कपूर, प्रख्यात शिक्षाविद्, प्रो. रमेश चन्द्र गौड़, डीन प्रशासन, आईजीएनसीए, प्रो. प्रतापानन्द झा, डीन अकादमिक, आईजीएनसीए आदि विद्वद्गण उपस्थित रहे। सर्वप्रथम प्रो. रमेश चन्द्र गौड़ द्वारा सभी अतिथियों का सत्कार करते हुए स्वागत वक्तव्य दिया गया। इसके अनन्तर प्रो. शैलेन्द्र राज मेहता द्वारा संगोष्ठी की संकल्पना प्रस्तुत की गई, जिसके अन्तर्गत इन्होंने वेद को सर्वमान्य एवं सर्वपूज्य माना। इन्होंने अपने आरम्भिक वक्तव्य में प्रो.माइकल वित्ज़ेल की वैदिक साहित्य सम्बन्धी 4x4 मैट्रिक्स की अवधारणा को केन्द्र में रखा। प्रो. मेहता ने वेदों के प्रकाशन में

पाश्चात्य विद्वानों के योगदान के विषय में चर्चा की एवं भारत में सामान्य एवं विशिष्ट वर्ग द्वारा वैदिक साहित्य के प्रति अनभिज्ञता विषयक विडम्बना भी व्यक्त की। इसी क्रम में इनके द्वारा सभा के समक्ष वैदिक साहित्य से सम्बन्धित सात महत्त्वपूर्ण प्रश्न रखे गए और उनके विमर्श की अनिवार्यता का प्रतिपादन किया गया। ये प्रश्न निम्नलिखित हैं-

1. समृद्ध वैदिक सम्पदा होने पर भी भारतीय गुलाम क्यों हुए ?
2. वेदों को गुप्त क्यों रखा गया ?
3. भारत में संहिता और उपनिषद् के ज्ञाता तो हैं किन्तु ब्राह्मण ग्रन्थों के विशेषज्ञ अत्यल्प हैं। आरण्यक के ध्यान-ज्ञान सम्बन्धी प्रतिपाद्य हमारी चेतना में ही नहीं हैं। भारतीय दशग्रंथी (संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् और छः वेदांग) परम्परा पर बहुत कम लोगों ने अध्ययन किया है। इसका प्रमुख कारण क्या है ?
4. केवल भारत के सन्दर्भ में विचार करना पर्याप्त नहीं है। भारत में समग्र दृष्टि का अभाव क्यों रहा है ?
5. वेदों की समग्रता निरुक्तकार यास्क के समय तक समाप्त क्यों हो गई ?
6. तुर्की, ईरानी, सुमेरियन इत्यादि सभ्यताओं पर वेदों का स्पष्ट प्रभाव देखने को मिलता है। जैसे - बोगाजकोई के शिलालेख में ऋग्वेद की ऋचाओं का उल्लेख एवं अवेस्ता आदि ग्रन्थों में वैदिक संस्कृत शब्दों का प्रयोग इत्यादि। इस प्रकार प्राचीनकाल से अद्यावधिपर्यन्त वेदों के प्रति रुचि देखने को मिलती है। इसका क्या कारण है ?
7. हमारा उद्गम जहाँ से हुआ, वहाँ शासन व्यवस्था, राजव्यवस्था इत्यादि कैसी थीं, क्या इसका उल्लेख भारतीय विद्वानों द्वारा किया गया ?

इसके अनन्तर प्रो. कपिल कपूर द्वारा अपने बीज वक्तव्य में सनातन वैदिक ज्ञान परम्परा के नैरन्तर्य पर प्रकाश डाला गया। इन्होंने पण्डित भगवत शास्त्री, पण्डित सूर्य नारायण शास्त्री, ताराचन्द इत्यादि अनेक ज्ञात-अज्ञात विद्वानों के वैदिक परम्परा के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु दिए महत्त्वपूर्ण योगदान पर भी अपने विचार प्रस्तुत किए। वेद को श्रुति बताते हुए प्रो. कपूर ने केवल लिखित सामग्री अर्थात् प्रकाशित पुस्तकों के आधार पर वैदिक परम्परा का आंकलन करने को पूर्णतः अनुपयुक्त माना। वेद ही समस्त भारतीय भाषाओं एवं सम्पूर्ण साहित्य का मूल स्रोत है, इस बात पर जोर देते हुए इनके द्वारा गुरु-शिष्य परम्परा का उल्लेख किया गया तथा वैदिक शिक्षण परम्परा को संरक्षित करने हेतु प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति एवं आधुनिक तकनीकी के समन्वय पर बल दिया। सत्र के अन्त में प्रो. प्रतापानन्द झा द्वारा वेद और ज्ञान को एक दूसरे का पर्याय बताते हुए मनुष्य के एक मन्त्र द्वारा ही आनन्द-प्राप्ति के सामर्थ्य की चर्चा की गई। इनके द्वारा सभा में उपस्थित सभी विद्वानों एवं श्रोताओं का आभार-ज्ञापन भी किया गया।

इस द्वि-दिवसीय संगोष्ठी में उद्घाटन एवं समापन सत्र के अतिरिक्त **छः शैक्षणिक सत्र** हुए, जिनका समन्वयन ऋग्वेदीय, यजुर्वेदीय, सामवेदीय, अथर्ववेदीय एवं ब्राह्मण और आरण्यक की परम्परा के क्रमानुसार किया गया। इन सत्रों में वैदिक साहित्य के कुल **18 पारम्परिक एवं आधुनिक विद्वानों** ने अलग-अलग विषयों पर वक्तव्य दिया। उनके मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं –

प्रथम दिवस – 30 मई, 2024

प्रथम सत्र (प्रातः 11.45- मध्याह्न 1.15 बजे)

विषय - ऋग्वेदीय परम्परा

इस सत्र के अन्तर्गत चार वक्ता रहे- डॉ. अरुण कुमार मिश्र, प्रो. सुधीर लाल, डॉ. योगेश शर्मा एवं प्रो. रजनीश कुमार मिश्र। इस सत्र के मुख्य प्रकाश्य बिन्दु इस प्रकार हैं -

1. **डॉ. अरुण कुमार मिश्र – ऋग्वेद की भाष्य परम्परा**
    - ऋग्वेद के भाष्यकारों द्वारा प्रतिपादित भाष्य सिद्धान्तों पर विचार करना अनिवार्य है। निरुक्त के अन्तर्गत कौत्स के रूप में पूर्वपक्ष द्वारा सात प्रश्न किये गए, जिसका उत्तर यास्क द्वारा दिया गया है।
    - यास्क के अतिरिक्त दुर्गाचार्य, स्कन्दस्वामी, उद्गीथ, माधवभट्ट, वेंकटमाधव, आनन्दतीर्थ, सायण, दयानन्द सरस्वती, महर्षि अरविन्द, मधुसूदन ओझा, श्रीराम शर्मा, प्रो हरिनारायण तिवारी इत्यादि द्वारा भाष्य परम्परा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया गया।

2. प्रो. सुधीर लाल एवं डॉ. योगेश शर्मा – वैदिक हेरिटेज पोर्टल (प्रस्तुतीकरण एवं व्याख्या)

- **प्रस्तुतीकरण**- वैदिक हेरिटेज पोर्टल का मुख्य उद्देश्य वैदिक शास्त्रों में विद्यमान ज्ञान का सार्वभौमिक कल्याण हेतु सम्प्रेषण करना है। इसके अन्तर्गत वेद की अमूर्त मौखिक परम्परा, पाण्डुलिपियाँ, प्रकाशित ग्रन्थ, यज्ञ सम्बन्धी उपकरणों इत्यादि की जानकारी दी गई है।
- इस पोर्टल में वेद सम्बद्ध लगभग 550 घंटे की ऑडियो-विज़ुअल रिकॉर्डिंग्स उपलब्ध हैं। साथ ही, प्रो. शशिप्रभा कुमार के सौजन्य से प्राप्त सूक्तियों को प्रतिदिन पोर्टल के मुख्य पृष्ठ पर डालकर सामान्य लोगों को वेद के प्रति जागरुक करना एक नवीन प्रयोग है।
- यूनेस्को (UNESCO) द्वारा 2007 में ऋग्वेद की पाण्डुलिपियों को यूनेस्को मेमोरी ऑफ़ द वर्ल्ड रजिस्टर के अन्तर्गत और 2008 में वैदिक मन्त्रोच्चारण परम्परा को अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची के अन्तर्गत परिगणित किया गया है।
- **व्याख्या**- वेद की दो परम्पराएँ समानान्तर रूप से देखने को मिलती हैं। पहली, जो केवल मन्त्र भाग को वेद मानती हैं तथा दूसरी, जो मन्त्र और ब्राह्मण दोनों को वेद के रूप में स्वीकार करती हैं।
- वेद को 4x4 मैट्रिक्स की अवधारणा के अनुसार देखना युक्तियुक्त प्रतीत नहीं होता, क्योंकि संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् को पृथक्-पृथक् रूप में नहीं देखा जा सकता। जैसे- तैत्तिरीय ब्राह्मण का ही अंश तैत्तिरीयारण्यक है, और तैत्तिरीयारण्यक के 7-9 प्रपाठक को ही तैत्तिरीयोपनिषद् कहा गया है। इसके अतिरिक्त एक ही मन्त्र अलग-अलग स्थानों पर प्रयोग वैभिन्न्य के साथ विद्यमान है।
- निरुक्तकार यास्क ने अनेक नैरुक्तों का उल्लेख किया है, जिससे वेद की केवल तीन नहीं, अपितु अनेक व्याख्या पद्धतियों की जानकारी प्राप्त होती है। वेद-समग्रता की यह परम्परा निरुक्तकार यास्क के बाद भी देखने को मिलती है। जैसे- पतंजलि के महाभाष्य, दण्डी के दशकुमारचरित, कालिदास के रघुवंश आदि में वेदों की समग्र दृष्टि का दर्शन होता है।

3. प्रो. रजनीश कुमार मिश्र – Veda in Kashmir: A review

- *'Veda in Kashmir'* प्रो. माइकल वित्ज़ल द्वारा रचित ग्रन्थ है, जिसका प्रकाशन हारवर्ड ऑरियण्टल सीरीज से हुआ। इसके अन्तर्गत वेद की कश्मीरी परम्परा सम्बन्धित सामग्री संकलन एवं डॉक्यूमेंटेशन किया गया है, जो भारतीय ज्ञान परम्परा के क्षेत्र में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं प्रशंसनीय कार्य है।
- भारत में आगम और निगम की परम्पराएँ समानान्तर रूप से दृष्टिगत होती हैं किन्तु इस ग्रन्थ में आगम परम्परा का उल्लेख नहीं किया गया है।
- ग्रन्थ में Isolated from rest of India, Isolated from rest of Asia, Sanskritization, Brahmanization, Bramanical आदि शब्दों का प्रयोग किया गया है, जिनसे लेखक का पूर्वाग्रह परिलक्षित होता है।
- ग्रन्थ में कश्मीर की राजभाषा के रूप में उर्दू भाषा को स्वीकार किया गया है, जबकि वहाँ की प्रचलित भाषाएँ प्रायः संस्कृत, कश्मीरी और डोगरी रहीं हैं।

द्वितीय सत्र (मध्याह्न 2.00- 3.30 बजे)

विषय - यजुर्वेदीय परम्परा, भाग – 1

इस सत्र के अन्तर्गत दो वक्ता रहे- प्रो. गोपाल प्रसाद शर्मा एवं प्रो. सुन्दर नारायण झा। इस सत्र के मुख्य प्रकाश्य बिन्दु इस प्रकार हैं –

1. **प्रो. गोपाल प्रसाद शर्मा - वैदिक संहिता पाठ के लिए अष्ट विकृतियों की महत्ता**

- भारत में अध्ययन की व्यवस्थित प्रणाली रही, जिसके अन्तर्गत छात्र को पहले पाठ का स्मरण करवाया जाता था, तदनन्तर उसपर विचार होता था, जैसे - '**अथातो धर्म जिज्ञासा**'। इस प्रकार भारत में प्राचीनकाल से विधिवत् वेदाध्ययन के पश्चात् जिज्ञासा शान्ति हेतु गुरु-शिष्य के मध्य परस्पर संवाद एवं विषय सम्बन्धी विमर्श करने की परम्परा रही है।
- वेदों के संरक्षण हेतु वेदपाठ के दो भेद स्वीकार किये गए हैं – 3 प्रकृति पाठ (संहिता पाठ) एवं 8 विकृति पाठ (पदपाठ, क्रमपाठ, जटापाठ , शिखापाठ, घनपाठ आदि)। इनमें विकृति पाठों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। विभिन्न साभ्यतिक एवं सांस्कृतिक व्यवधानों के बावजूद वेदपाठ की परम्परा के द्वारा वेद सर्वदा सुरक्षित रहे।

2. **प्रो. सुन्दर नारायण झा - यजुर्वेद (संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् की परम्परा)**

- वेद ही ब्रह्म है। मैत्रायणी उपनिषद् में शब्दब्रह्म और परब्रह्म की चर्चा की गई है। वेद आदि शास्त्र शब्दब्रह्म हैं, जिनके अध्ययन से मनुष्य परब्रह्म को जानने का अधिकारी हो जाता है। वेद की विभिन्न परम्पराएँ प्रचलित हैं, यथा- ब्रह्म परम्परा, आदित्य परम्परा आदि।
- महर्षि वेदव्यास द्वारा वेद को चार भागों में विभाजित किया गया- ऋग्वेद (ज्ञान), यजुर्वेद (कर्म), सामवेद (उपासना) एवं अथर्ववेद (ज्ञान, कर्म और उपासना)।
- वेदों में पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। यथा – 'संहिता' शब्द के विभिन्न अर्थ हैं - पदप्रकृतिः संहिता (यास्काचार्य), परः सन्निकर्ष संहिता (पाणिनि) इत्यादि।

प्रश्नोत्तरी

1. वेदों का विभाजन वेदव्यास द्वारा किया गया। यहाँ यह संशय है कि ये बादरायण व्यास थे अथवा कृष्णद्वैपायन व्यास थे?
   उत्तर- प्रत्येक चतुर्युगी में द्वापरयुग के अन्त में व्यास हुए हैं। इनमें बादरायण व्यास, अपान्तरतमा व्यास और कृष्णद्वैपायन व्यास आदि प्रमुख रूप से उल्लिखित हैं। 28वें व्यास कृष्णद्वैपायन थे, जिनके द्वारा वेदों का विभाजन किया गया।

2. ऋषि और देवता में से पहले कौन हुए?
   उत्तर – ऋषि मन्त्रों के साक्षात्कारकर्ता, प्रवचनकर्ता एवं अध्ययन-अध्यापनकर्ता हैं। देवता शब्द का निर्वचन निरुक्तकार ने इस प्रकार किया है – **देवो दानाद्वा द्योतनाद्वा दीपनाद्वा द्युस्थानो भवति** अर्थात् देवता वह है, जो दान देता है, द्योतन एवं दीपन करता है तथा द्युस्थानीय है।

3. ऐसा कहा गया है – '**ऋषिर्दर्शनात्**', यहाँ ऋषि का क्या अभिप्राय है ?
   उत्तर – जब जीव में प्रत्येक पदार्थ के दर्शन की क्षमता आ जायेगी, तब वह ऋषि बन जायेगा।

4. क्या वेदों के सभी मन्त्रों का विनियोग यज्ञ में होता है ?
   उत्तर – हाँ, वेद की एक संज्ञा आम्नाय भी है। आम्नाय शब्द क्रियार्थक है। वेद के सभी मन्त्र क्रियार्थक हैं। यज्ञ में चार ऋत्विज स्वीकार किये गए हैं – होता (ऋग्वेद), अध्वर्यु (यजुर्वेद), उद्गाता (सामवेद) एवं ब्रह्मा (अथर्ववेद)।

5. ऋग्वेद में मुख्य एवं प्रक्षिप्त अंश कौनसा है ?
   उत्तर – ऋग्वेद में प्रक्षिप्त अंश होने की बात पाश्चात्य विद्वानों द्वारा की गई है, किन्तु भारतीय विद्वानों के मतानुसार सम्पूर्ण ऋग्वेद ही मुख्य है।

तृतीय सत्र (सायं 4.00 - 5.15 बजे)

विषय - यजुर्वेदीय परम्परा, भाग – 2

इस सत्र के अन्तर्गत दो वक्ता रहे- प्रो देवेन्द्र मिश्र एवं प्रो ओमनाथ बिमली। इस सत्र के मुख्य प्रकाश्य बिन्दु इस प्रकार हैं –

1. **प्रो. देवेन्द्र मिश्र – यजुर्वेद के वेदार्थ में वेदांगों की भूमिका**

    - महर्षि पाणिनि द्वारा वेदांगों को वेदपुरुष के अंग रूप में स्वीकार किया गया है-

        छन्दः पादौ तु वेदस्य हस्तौ कल्पोऽथ पठ्यते ।
        ज्योतिषामयनं निरुक्तं श्रोत्रमुच्यते ।।
        शिक्षा घ्राणं तु वेदस्य मुखं व्याकरणं स्मृतम् ।
        तस्मात्साङ्गमधीत्यैव ब्रह्मलोके महीयते ।।

    - निरुक्त में निर्वचन शब्दों के पर्यायवाची न होकर विशेष अर्थ के द्योतक हैं। यथा – सविता शब्द का अर्थ है – जो चींटी को भी अपने कार्य हेतु प्रेरित करे। इसी प्रकार समजा (पशुओं का समवाय) और समाज (मनुष्यों का समवाय) के भी विशिष्ट अर्थ प्रतिपादित हैं।

2. **प्रो. ओमनाथ बिमली – वेद और मीमांसा**

    - वेद का सामान्य अर्थ है – ज्ञान। प्रायः ज्ञान के तीन रूप हो सकते हैं – ज्ञान (सामान्य), प्रज्ञान (वैज्ञानिक का ज्ञान) एवं सम्प्रज्ञान (योगी का ज्ञान)। वेद ज्ञानस्वरूप हैं। स्वामी चिन्मयानन्द का कथन है कि जिस प्रकार व्याकरण में 'यद्यपि' शब्द वृद्धि न होकर, वृद्धि का एक उदाहरण है, उसी प्रकार पुस्तकालयों में उपलब्ध वेद, वेद न होकर, उसका एक उदाहरण हैं।
    - वेद विधि-निषेधात्मक हैं। विधि एवं निषेध रूप प्रमाणों के द्वारा वेद धर्म और अधर्म के बोधक हैं।
    - वेद और वेदार्थ के कृत्स्नवित् (समग्र) बनने हेतु मीमांसा की आवश्यकता है। वेदार्थ विचार (ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् आदि का अर्थ) ही मीमांसा है। मीमांसा के अनुसार, वेद के द्वारा स्वर्ग रूप उपेय को शारीर कर्म (यज्ञ आदि) रूप उपाय से जाना जा सकता है।

प्रश्नोत्तरी

1. सामान्य वर्ग को वेद से कैसे जोड़ा जाए ?
   उत्तर - वेद के प्रतिपाद्य का विस्तार सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति एवं साहित्य में देखने को मिलता है। यथा – जयशंकर प्रसाद की रचनाओं का उपजीव्य शतपथ ब्राह्मण और मत्स्य पुराण आदि माना गया है। इस प्रकार भारतीय संस्कृति, साहित्य एवं लोगों के जीवनदर्शन का आधार भी वेद ही रहा है।
2. दस वर्ष के बालक को भी वेद के प्रति आकर्षित कैसे किया जाए ?
   उत्तर - भारतीय लौकिक साहित्य के अन्तर्गत पञ्चतन्त्र, वेतालपञ्चविंशति, हितोपदेश इत्यादि अनेक सरस एवं बालसुलभ ग्रन्थों का प्रणयन हुआ, जिनके बीज हमें वैदिक वाङ्मय में प्राप्त होते हैं। अतः बालकों को कथा-कहानियों के माध्यम से वेद एवं वेदार्थ का बोध कराना भारतीय शिक्षण पद्धति का वैशिष्ट्य रहा है।

द्वितीय दिवस – 31 मई, 2024

प्रथम सत्र (प्रातः 10.00 – 11.30 बजे)

विषय - सामवेदीय परम्परा

इस सत्र के अन्तर्गत तीन वक्ता रहे – प्रो. गिरिजा प्रसाद षडंगी, प्रो. सी.एम. नीलकन्धन एवं प्रो. शशिप्रभा कुमार। इस सत्र के मुख्य प्रकाश्य बिन्दु इस प्रकार हैं –

1. **प्रो. गिरिजा प्रसाद षडंगी – सामवेद के वेदार्थ की परम्परा**
    - संगीत की उत्पत्ति सामवेद से मानी गई है, जिसके अन्तर्गत एक मन्त्र के अट्ठारह प्रकार के अर्थ किये गए हैं।
    - सामवेद का एक-एक शब्द शरीर और मन को रोमांचित कर देता है, जिससे रस-निष्पत्ति होती है। बिना रस-निष्पत्ति के भाष्य करना सम्भव नहीं है।

2. **प्रो. सी.एम. नीलकन्धन – सामवेद : केरलीय परम्परा संहिता, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद्**
    - केरलीय सामवेद परम्परा का सम्बन्ध जैमिनीय शाखा से है। वर्तमान में केरल राज्य में कुल 21 सामवेदीय परम्परा से सम्बन्धित परिवार हैं, जिनमें त्रिस्सूर जिले में 5 शेष रह गए हैं।
    - केरलीय परम्परा के अन्तर्गत तीन चरणों में सामवेद के संरक्षण हेतु कार्य किया गया है। प्रथम दो चरणों में पाँच विद्वानों द्वारा 95 घण्टों की ऑडियो-विज़ुअल रिकार्डिंग की गई है तथा तृतीय चरण में भारत सरकार के साथ समन्वयन किया जा रहा है।
    - सामवेद की जैमिनीय शाखा में प्रकृतिपाठ के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं, यथा – ऋक्, अर्चिक, आरण्यक, चन्द्रसाम, साम और ग्रामगेय। इसके अतिरिक्त सामवेद के मन्त्रों का पदपाठ नहीं किया जाता है।

3. **प्रो. शशिप्रभा कुमार – महर्षि दयानन्द की वैदिक दृष्टि**
    - महर्षि दयानन्द के अनुसार, संहिताभाग (मन्त्रभाग) ही वेद हैं, ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद् आदि नहीं। ईश्वर असीमित, अनन्त है, अतः उनका ज्ञान भी नित्य है। ईश्वरप्रणीत होने के कारण वेद भी अनन्त हैं एवं स्वतः प्रमाण्य हैं।
    - महर्षि दयानन्द ने समाज की कुरीतिओं को दूर करने हेतु अनेक कार्य किये। इनके द्वारा वेदाध्ययन का अधिकार पुरुष एवं स्त्रियों को समान रूप से दिया गया।

द्वितीय सत्र (प्रातः 11.45 – मध्याह्न 1.15 बजे)

विषय - अथर्ववेदीय परम्परा

इस सत्र के अन्तर्गत तीन वक्ता रहे – आचार्य मुरलीकृष्णाचार्य, प्रो. प्रेम कुमार शर्मा एवं प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल। इस सत्र के मुख्य प्रकाश्य बिन्दु इस प्रकार हैं –

1. **आचार्य मुरलीकृष्णाचार्य - अथर्ववेद : संहिता, ब्राह्मण, उपनिषद् एवं वेदांग**
    - अथर्ववेद के दो भाग हैं – प्रथम, जिसके अन्तर्गत ऋषि भृगु द्वारा दृष्ट मन्त्र हैं तथा द्वितीय, जिसमें अर्थवा अङ्गिरस द्वारा दृष्ट मन्त्रों का निरूपण किया गया है।
    - भैषज्यवेद, इतिहास, पुराण, स्थापत्य, सर्पवेद, पिशाचवेद, असुरवेद आदि अथर्ववेद के उपवेद हैं, जिनमें राजनीति, अर्थशास्त्र, राजा के कर्त्तव्य, ब्रह्म-कर्त्तव्य, चिकित्सा, प्राचीन आख्यान, यातु इत्यादि का वर्णन किया गया है।
    - गोपथ ब्राह्मण उपलब्ध होने पर भी अथर्ववेद की स्मार्त परम्परा पर विचार करना आवश्यक है।

2. **प्रो. प्रेम कुमार शर्मा – वेदार्थ में वेदांग ज्योतिष की भूमिका**
    - मनुष्य का शरीर यज्ञकुण्ड के समान है, जिसमें आहुतियाँ प्रदान की जाती हैं। इस यज्ञ द्वारा जीव की कर्म में प्रवृत्ति होती है तथा समस्त कर्मों के सम्पादन हेतु सूर्य और चन्द्र आदि की स्थिति महत्त्वपूर्ण है।

- सूर्य के उत्तरायण और दक्षिणायन, पूर्णिमा और अमावस्या आदि के ज्ञान में ज्योतिषशास्त्र की महती भूमिका है।

3. प्रो. सन्तोष कुमार शुक्ल – वेद एवं मीमांसा

- मीमांसा दर्शन के अनुसार वेद अपौरुषेय हैं, क्योंकि किसी व्यक्ति का कथन सार्वभौमिक नहीं हो सकता, जबकि वेद सार्वभौमिक हैं। लौकिक वाक्य प्रत्यक्ष प्रमाण पर आधारित होते हैं। इनमें पुरुषान्तर, अवस्थान्तर एवं देशान्तर के आधार पर वाक्य विपर्यय होता है।
- मीमांसकों द्वारा वेदों की यज्ञपरक व्याख्या की गई है। शतपथ ब्राह्मण में यज्ञ के दो भेद माने गए हैं- द्रव्य यज्ञ एवं सृष्टि यज्ञ। सृष्टि यज्ञ के अवगमन हेतु द्रव्य यज्ञ का बोध आवश्यक है। यथा- अग्निहोत्र आदि।

तृतीय सत्र (मध्याह्न 2.00 – 3.30 बजे)

विषय - ब्राह्मण एवं आरण्यक की परम्परा

इस सत्र के अन्तर्गत चार वक्ता रहे – डॉ. कीर्तिकान्त शर्मा, प्रो. कुलदीप कुमार, डॉ. रितेश शर्मा एवं डॉ. रेणुका राठौड। इस सत्र के मुख्य प्रकाश्य बिन्दु इस प्रकार हैं –

1. **डॉ. कीर्तिकान्त शर्मा – शतपथ ब्राह्मण एवं सूचीकरण प्रक्रिया**

   - शतपथ ब्राह्मण सबसे बड़ा ब्राह्मण (14 काण्ड) है, जिसके अन्तर्गत मुख्य रूप से श्रौतयज्ञों के विधि-विधान उल्लिखित हैं।
   - इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा ब्राह्मण ग्रन्थों का विषयानुसार सूचीकरण किया गया है। इसकी वेबसाइट पर विभिन्न ब्राह्मण ग्रन्थों की पाण्डुलिपियों को डिजिटल रूप में अपलोड किया गया है।

2. **प्रो. कुलदीप कुमार – ब्राह्मण एवं आरण्यक**

   - ब्रह्मविषयक ग्रन्थ ब्राह्मण हैं एवं अरण्य में ही पाठ्य ग्रन्थ आरण्यक हैं। ये ब्राह्मण ग्रन्थों के ही भाग हैं। ये नवनीत एवं औषधि की भांति वेद के रहस्य ग्रन्थ हैं।
   - वेद के व्याख्याकारों द्वारा वैदिक शब्दों का भिन्न-भिन्न अर्थ-निर्धारण किया गया है। जैसे – अग्नि शब्द में स्वर के आधार पर अर्थ परिवर्तन की चर्चा की गई है। स्वयं अग्नि शब्द में अग्नि तत्त्व विद्यमान है।

3. **डॉ. रितेश शर्मा – वैदिक व्याख्या पद्धति**

   - वेद व्याख्या पद्धति में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विषय इसकी भाषा का विमर्श है। वेद भाष्यकारों द्वारा क्लिष्ट एवं दुरुह भाषा का प्रयोग किया गया है।
   - वैदिक व्याख्या पद्धति को समझने हेतु संहिता (जो कुछ स्थूल है), ब्राह्मण (संहिता के कारण का प्रकटीकरण करने की पद्धति), आरण्यक (विषयबोध के बाद की आनन्दानुभूति) और उपनिषद् (आनन्द की अतिशयता) को इस दृष्टि से भी समझा जा सकता है।

4. डॉ. रेणुका राठौड – वेद : अनन्त सम्भावनाओं का उद्गम

- वैदिक साहित्य ज्ञान और विज्ञान दोनों का पर्याय रूप है। इसके अन्तर्गत ब्रह्मबोध को ज्ञान और यज्ञबोध को विज्ञान कहा गया है। वेद के वैशिष्ट्य का प्रातिस्विक, सामाजिक एवं वैश्विक स्तरों पर अवबोध होता है।
- वैदिक ऋषियों को ज्ञान का संवाहक माना गया है। ऋषिगण विविध प्राणों का प्रतिनिधित्व करते हैं, यथा – भरद्वाज (मन), जमदग्नि (चक्षु), विश्वामित्र (श्रोत्र) एवं विश्वकर्मा (वाक्) इत्यादि।

समापन सत्र (मध्याह्न 3.45 – सायं 5.15 बजे)

इस सत्र में प्रो. शैलेन्द्र राज मेहता, प्रो. रजनीश कुमार मिश्र, प्रो. प्रतापानन्द झा आदि मञ्चासीन रहे। सर्वप्रथम प्रो. शैलेन्द्र राज मेहता द्वारा सभी शास्त्रों में परस्पर अन्तःसम्बन्ध एवं कलाओं की प्रवाहशीलता के विषय में अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया गया। इन्होंने कहा कि ब्राह्मण-आरण्यक आदि ग्रन्थों में उल्लिखित संगीत, शिक्षाविधि, समाजशास्त्र, योग, ध्यान, उपासना आदि को प्रकाश में लाने की आवश्यकता है। इसके लिए गुरुकुल शिक्षा पद्धति महत्त्वपूर्ण साधन सिद्ध होगी।

इसके अनन्तर प्रो. रजनीश कुमार मिश्र द्वारा कहा गया कि भारत में ज्ञान का आरम्भ जिज्ञासा से एवं अन्त 'नेति-नेति' से होता है। भारतीय चिन्तन में परस्पर अविरोध है, अतः ज्ञान (वेद/दर्शन) का आस्तिक अथवा नास्तिक, वैदिक अथवा अवैदिक के आधार पर विभाजन तर्कसंगत नहीं है। सभी ज्ञान, विज्ञान, कलाओं का अध्ययन-अध्यापन समग्रता की दृष्टि से किया जाए।

प्रो. प्रतापानन्द झा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन एवं विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए सुझावों का अनुमोदन किया गया। अन्त में शान्तिपाठ से संगोष्ठी का समापन हुआ।

विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए सुझाव

1. प्रस्तावित किया गया कि संगोष्ठी का शीर्षक 'वेद : एक समग्र दृष्टि' न होकर 'वेद : एक समग्र दृष्टिकोण' होना युक्तियुक्त होगा।
2. संस्कृत के प्रति रुचि जागृत करने हेतु शैक्षणिक संस्थानों द्वारा विभिन्न प्रयास किये जाए।
3. वैदिक शोध संस्थानों की स्थापना की जाए।
4. शोधार्थी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान की जाए।
5. प्रौढ़ नागरिकों को संस्कृत का अध्ययन करवाया जाए।
6. शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल शिक्षा पद्धति का अनुसरण किया जाए।

- **कलाकोश विभाग**